International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 02-09-2022, Accepted: 18-09-2022, Published: 06-10-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 26-28

शिक्षा एवं समाज

प्रमिला वास्केल
सहा. प्रा. समाजशास्त्र, शा. महाविद्यालय जयसिंहनगर, शहडोल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
व्यक्तित्व के सर्वागीण विकास का आधार एवं समाज दर्पण शिक्षा है। यह देश की उन्नति और विकास का संवाहक एवं प्रेत्यक महत्वाकांक्षी समाज की सर्वोच्च प्राथमिकता है। किसी गतिशील समाज में शिक्षा की अवधारणा उस समाज की नैतिकताओं, आदर्शवादी अपेक्षाओं, बेहतर जीवन मूल्यों और व्यावहारिक जीवन की मांगो से जोड़कर गढ़ी जाती है।[1] समाज में शिक्षा का विकास एक आधारभूत नींव है। शिक्षा से समाज का विकास निर्भर करता है। शिक्षित व्यक्ति ही समाज का विकास कर सकता है, शिक्षा समाज में जातिगत भेद–भाव को समाप्त करने में कारगर है। समाज के रिती–रिवाज, परंपराएं, रूढ़ीयां, प्रथा, अंधविश्वास विकास में बाधा डालती है लेकिन समाज में शिक्षा के प्रचार प्रसार से शिक्षित मनुष्य समाज में तर्क–वितर्क के साथ अंधविश्वास को दुर करने में सफल रहता है। वर्तमान समाज में शिक्षा का योगदान अमिट है। शिक्षा से ही सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक परिदृश्य को सुधारा जा सकता है।

मूल शब्दः शिक्षा एवं समाज, शिक्षित मनुष्य, समाज का विकास

प्रस्तावना
शिक्षा समाज के उन्नयन का एक अहम् पड़ाव है। मानव के प्रारंभिक इतिहास पर नजर डाले तो मानव जाति की दैनिक जीवन की क्रियाएं अत्यंत कम होने के कारण जीवन सरल और सहज था क्रमशः मानव जाति सभ्यता एवं विकास की ओर अग्रसर हुई तो मानवीय क्रियाओं में वृद्धि होने लगी ओर शिक्षा का महत्व का बढ़ गया है, शिक्षा समाज की आधारशिला है। वर्तमान में शिक्षा पर समाज एवं विधिक द्वारा जोर दिया जाता है।[2] शिक्षा के द्वारा मनुष्य का मानसिक विकास होता है। शिक्षा ही सफलता की कुंजी है। शिक्षा के बिना मनुष्य जीवन अपंग–सा हो जाता है। शिक्षित व्यक्ति आत्म निर्भर एवं आत्मविश्वासी होने के साथ जीवन के हर पहलू को समझने एवं सोचने की क्षमता रखता है। समाज में सभी को शिक्षा प्राप्त होना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षित व्यक्ति न सिर्फ परिवार के विकास में सहयोग करता है बल्कि पूरे समाज को शिक्षित कर सकता है।[3]
शिक्षा समाज में परिवर्तन का प्रेरक है। शिक्षा किसी भी देश के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक तत्वों में से एक है। एक शिक्षित समाज ही देश को उन्नत और समृद्ध बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। शिक्षा विहीन समाज साक्षात् पषु के समान बताया गया है। संस्कृत के महान कवि श्री भर्तृहरी जी ने स्पष्ट रू‍प से कहा भी है '' शिक्षा विहिन साक्षात् पशु पुच्छ विशाणहीनः हमारे वैदिक मंत्रों में भी मंत्रित है असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृत गमय इसका अर्थ हुआ कि विद्या अथवा शिक्षा सत्य का ज्ञान का अमरता का कारण है। जब शिक्षा में अमरता प्रदान कराने में सहायक है तो एक शिक्षित समाज देश को अमर करने में अपनी भूमिका क्यो नहीं निभा सकता है। देश की समस्याओं का समाधान शिक्षा से ही संभव है। शिक्षित व्यक्ति प्रत्येका कार्य को सोच समझकर करता है। जब बच्चे स्कूल जाते है तो बचपन में ही सिखाया जाता है कि पानी का दुरपयोग ना करे, बिजली की बचत करे, पर्यावरण को संरक्षित करे, समय की बचत करे, समाज में फैले अंधविश्वास को दूर करने का प्रयास भी षिक्षा का ही कार्य होता है। शिक्षित व्यक्ति छोटी –छोटी बातो का व्यहारिकता में लाता है जिससे समाज के हर उस व्यक्ति की जानकारी तक पहुंच सके। शिक्षा में परिवर्तन यह ईश्वरीय कार्य है।यदि देश का उत्थान करना है, जगतगुरू बनाना है तो शिक्षा का प्रचार – प्रसार करना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा से ही समाज में व्यक्तित्व विकास होगा जिससे देश उन्नत होगा।[4] किसी भी राष्ट्र के सम्पूर्ण उत्थान के लिए शिक्षा ही वह आधारशीला है। जिस पर एक आदर्श समाज की इमारत को खडी की जा सकती है क्योकि पढ़ा–लिखा समाज ही आदर्श समाज की और अग्रसर होता है। आदर्श समाज से तात्पर्य यह है जहां विभिन्न जातियां तो हो परंतु जातीय आधार पर को वर्ग में भेद न हो, अनेक संस्कृतियां तो हो परंतु उनमें आपसी द्वेश ना हो, कोई धर्म के नाम पर संघर्ष न करे, अनेक संस्कृतियां हो परंतु आपसी द्वेष ना हो कोई धर्म के नाम पर संघर्ष हो अपना आर्थिक विकास तो करे लेकिन किसी प्रकार का शोषण न करे।[5] शिक्षा और समाज का सिर्फ नजदीकी संबंधों को देखने की आवश्यकता है। प्राचीन काल में जो समाज व्यवस्था थी वह आज नहीं है। शिक्षा से समाज में व्यापकता आ गई। शिक्षा समाज की भविष्य को तय करता है। व्यक्ति और समाज के बीच समन्वन की जरूरत है। इस की पूर्ति शिक्षा के द्वारा की जा सकती है। व्यक्ति और समाज को भिन्न मान कर या किसी एक को महत्व देकर राष्ट्र का निर्माण नहीं किया जा सकता है।[6]''शिक्षा भावी समाज का निर्माण करती है। मानव सभ्याता के विकास के प्रारंभ में लोग पढ़ना लिखना नहीं जानते थे। वे उस समय एक सामाजिक दायरे में रहते थे और संभवतः ज्ञान–उपार्जन के तरीके भी ढ़ंढ लिये थे। धीरे–धीरे लोगों ने पढ़ना–लिखना सीखा और खूब सीखा। आज सारा विश्व इस बात पर एकमत है कि शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत और प्राथमिक आवश्यकता है।'' (प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत शिक्षा और प्रतिबोध) शिक्षा वो धरातल है जिसमें व्यक्ति विशेष की जन्मजात शक्तियों को पोषण मिलता है। शिक्षा के द्वारा जिस मानव का निर्माण किया जाता है

प्रकृति द्वारा बनाया नहीं अपितु वैसा होता है जैसा समाज चाहता है। अतः सामाजिक परिवेश से अलग शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती है शिक्षा के माध्यम से ही समाज के सदस्य, समाज के मानकों व प्रतिमानों के अनुरूप आचरण करना सीखाते है। मनुष्य के सामाजिक जीवन में शिक्षा के महत्व और उसकी उपादेयता को सदैव स्वीकार किया गया है। शिक्षा से ही सम्पूर्ण समाज का विकास संभव है। समाज में हर व्यक्ति शिक्षा का अधिकार रखता है।[7] शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारो के प्रति सचेत एवं जागरूक है। जिससे समाज एवं देश की उन्नति में सहायक है।[8] गांधी जी एवं नेहरू जी की मान्यता थी कि शिक्षा व्यक्ति को न केवल व्यक्तित्व प्रदान करती है अपितु वह उसकी सामाजिक स्थिति भी निर्धारित करती है।

शिक्षा से समाज में परिवर्तन

1. **शिक्षा से समाज में जागरूकता :–** शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की धुरी है। शिक्षा समाज में जागरूकता लाती है। शिक्षा का सीधा संबंध जागरूकमा से होता है। शिक्षा मनुष्य के अन्दर स्वतंत्र निर्णय लेने का भाव तथा अपने अधिकारों के प्रति सजगता की भावना का विकास करती है। सैकड़ो सालो से समाज में रूढ़िवादि परंपराओं, समाज में अधिकारो के प्रति सचेत करती है ताकि समाज में जीवनयापन करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने अधिकार को जानना और उनका उपयोग करने का तरिका एक शिक्षित व्यक्ति ही जान सकता है। शिक्षा ही समाज में जागरूकता लाती है।

2. **शिक्षा से समाज में महिला सशक्तिकरण :–** महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य है महिलाओं मे छिपी हुई उन शक्तियों, गुणों तथा प्रतिभाओं का विकास करना, जिनको व्यवहार में लाकर व अपने विकास की ओर स्वयं कदम बढ़ा सके और यह कार्य केवल शिक्षा से ही संभव है। शिक्षा के द्वारा ही महिलओं का सशक्तिकरण संभव है। शिक्षा सामाजिक सशक्तिकरण का प्रथम एवं मूलभूत साधन है। यह माना जाता शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे महिला समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भूमिका में दक्षता, कौशल ज्ञान एवं क्षमताओं का विकास होता है। प्राचीन समय में शिक्षा व्यवस्था न होने के कारण महिलाओं को शिक्षा से वंछित रखा जाता था साथ ही अनेको प्रथाओं व रूढ़ियों के कारण महिलाओं को उचित स्थान नहीं दिया जाता गया। महिलाओं को किसी भी प्रकार की गतिविधियों में शामिल नहीं किया जाता था क्योकि महिलाओं को शिक्षा पाने का अधिकार नहीं था। शिक्षा के अभाव में महिलाएं आश्रित और पराधीन बनी रहती है। अपने उपर होने वाले अत्याचारों का शोषण व उत्पीड़न को वह अपनी नियति समझती है तथा उसके खिलाफ बनाये गये कानूनों तथा वैधानिक प्रावधानों से वह बेखबर रहती है। अपने अधिकारों से वह बेखबर रहती है। परंतु वर्तमान समय में शिक्षा का अत्यधिक महत्व बढ़ गया है, समाज में महिलाओं में शिक्षा का अधिकार प्राप्त है अधिक से अधिक महिलाएं शिक्षित होकर अपने अधिकारों के प्रति सजग है जिससे महिलाओं में आत्म विश्वास बढ़ा एवं परिवार, समाज में अपना उचित स्थान प्राप्त कर निर्णय लेने की क्षमता का विकास हुआ। शिक्षित महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति सजग है वे वर्तमान में शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर हो कर अपना वर्चस्व हासिल करने में सक्षम है। शिक्षित महिलाओं को समाज में बराबरी का अधिकार प्राप्त होता है। वे समाज व राष्ट्र में प्रगति उन्नति के अवसर में भागीदारी में अपना योगदान देती है।

3. **शिक्षा समाज में अंधविश्वास को दुर** :– शिक्षा शिक्षित व्यक्ति समाज में किसी भी घटना के पिछे होने वाले कारण का पता लगता है और उन कारणो के तर्क–वितर्क के आधार पर विश्लेषण करता है। शिक्षा व्यक्ति का समग्र विकास करती है जिससे समाज में धर्म के नाम पर अंधश्रद्धा रखने वाले लोगों को ढ़ोगी बाबाओं के शिकार होने से बचाया जा सकता है। शिक्षित व्यक्ति समाज में फैली उन रूढ़िवादी, परम्पराएं, रीति–रिवाजों कुरीतियों के खिलाफ लड़ सकते है जो समाज को गुमराह करता है। शिक्षा समाज के लिए दर्पण का कार्य करती है जिससे व्यक्ति समाज में एक प्रकार से प्रतिमान व प्रकार्य के आधार पर संदर्भ समूह का निर्माण करते है।

4. **शिक्षा से समाज में नियंत्रण :–** शिक्षा किसी भी व्यक्ति के सुखद जीवन की मजबुत आधारशिला तैयार करती है। शिक्षा समाज में नियंत्रण लाती है समाज में व्याप्त बुराईयों को दुर करने के लिए एक प्रगतिशील एवं शिक्षित समाज की आवश्यकता है। समाज में शिक्षित व्यक्ति समाज के कई ऐसे पहलुओं पर प्रकाश ड़ाल सकता है जो समाज को गुमराह करता है, समाज में अपराधों को बढ़ावा देता है। समाज को नियंत्रित करने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षित व्यक्ति समाज में सकारात्मक वातावरण बनाता है जिससे अच्छे संस्कार आते है और समाज में एक सोहाद्रपूर्ण संबंध का प्रसार होता है। समाज में पारस्पारिक संबंधो में प्रगाढ़ता आती है। समाज में शिक्षित व्यक्तियो से ही संदर्भ समूह जैसे समूह का निर्माण होता है।

5. **शिक्षा से समाज का आर्थिक स्थिति में सुधार :–** शिक्षा बहुआयामी होती है जिससे व्यक्तियों के ज्ञान, कौशल, तकनीकी एवं विवेक में वृद्धि होती है। जो समाज का विकास करती है। समाज का विकास आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता हैं। समाज में प्रस्थिति और भूमिका का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रगतिशील समाज में व्यक्तियों के व्यवहार के साथ–साथ उनकी प्रस्थिति को भी जाना जाता है। शिक्षित युवा अपनी योग्यताओं एवं सूझबूझ के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों का सद्पयोग कर उत्पादन में वृद्धि करता है। स्वरोजगार व रोजगार की तलाश कर अपने समाज और देश के विकास में प्रगति लाते है। वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित हो कर आत्मनिर्भर बनना चाहता है जो समाज व राष्ट्र की उन्नति में गतिशीलता प्रदान कर सके। शिक्षा व्यक्ति को नई दिशा प्रदान करती है। शिक्षा आर्थिक निर्भरता में सहायक होती है।

6. **शिक्षा से सामाजीकरण :–** शिक्षा समाज के मूल्यों को उजागर करती है। समाज में शिक्षा प्राप्त व्यक्ति आने वाले पिढ़ीयो का सामाजीकरण कर समाज के मूल्यों और प्रतिमानों को आत्मसात करने में मदद करता है। शिक्षित व्यक्ति समाज में गुणो, संस्कृति एवं नैतिकताओं का विकास करता है और अन्य सदस्यों को प्रदान करता है। शिक्षा प्राप्त कर व्यक्ति समाज के अंतिम छोर तक पहुंच हो सके। वर्तमान समाज में शिक्षा की भूमिका बुनियादी आवश्यकताओं के लिए महत्वपूर्ण है।

7. **शिक्षा द्वारा समाज में संस्कृति का हस्तांरण :–**जब से मानव सभ्यता का उदय हुआ है तभी से भारत अपनी शिक्षा तथा दर्शन के लिए प्रसिद्ध रहा है। शिक्षा समाज के उन सभी पहलूओं को उजागर करती है जो समाज के हित में होते है शिक्षा समाज में एक व्यवस्थित क्रमबद्धता को गतिशीलता बनाये रखती है। तभी शिक्षा द्वारा समाज में संस्कृति का हस्तांरण सरल एवं सुगम्य हो गया है। शिक्षा समाज के मूल्यों को संजोकर रखती है, समाज के प्रत्येक सदस्य को सभ्यता से परिचित करती है। शिक्षा समाज के सदस्यों के व्यक्तित्व को निखारती है जिससे नैतिकता के विषय में अवगत हो सके। शिक्षा से सामाजिक, नैतिका एवं आध्यामिक मूल्यों का विकास होता है। शिक्षा से ही मानवीय गुणों व चारित्रिक विकास संभव होता है। शिक्षा समाज में व्यक्ति के आचरण को निश्चित दिशा प्रदान करती है। शिक्षा ही समाज में प्रगति का उत्तम साधन है।

उपसंहार

शिक्षा जीवन के दरवाजे की कुंजी है। जिसका लक्ष्य ज्ञान रूपी प्रकाश को फैलाना तथा अज्ञानता रूपी अंधकार को दुर करना। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो निरंतर चलती रहती है। मानव एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रह कर प्रतिदिन कार्यो का निर्वाह करता है, समाज के बदलते स्वरूप के कारण अनेको समस्याएं पैदा हो जाती है शिक्षा समाज के प्रति अपने दायित्वों को बखूबी निभाती है। शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा समाज में व्यवस्था कायम करती है, शिक्षा मूलभूत बुनियादी आवश्यकताओं को पूर्ण करने भरपूर सहयोग प्रदान करती है। शिक्षा से व्यक्ति समाज में नैतिक गुणो, आध्यात्मिक मूल्यों एवं व्यक्तित्व का विकास करता है। वर्तमान समय आधुनिकीकरण का है जिसमें शिक्षा का अत्यंधिक महत्वपूर्ण स्थान है। तकनीकि युग में अत्यंधिक कौशल व्यक्तियों का होना अनेक कुशलताओं में पारंगत होना आवश्यक है। शिक्षा और समाज व्यक्तियों के जीवन में अनेको परिवर्तन लाते है जैसे – आत्म – विश्वास, सशक्तिकरण, सामाजीकरण, आर्थिक स्थिति, संस्कृति का हस्तांरण, सामाजिक नियंत्रण, अंधविश्वास से दुरी, सामाजिक कुरीतियों, लिंग भेद निर्धनता के कारणों के प्रति जागरूकता आदि से परिवर्तन मानव जीवन में चरित्र निर्माण, व्यवस्थित एवं क्रमबद्धता लाती है। शिक्षा समाज व देश में उन्नती के अवसरों का निर्माण करती है। शिक्षा अपने आप में एक विस्तृत संसार है और उसे संसार का प्रतिबिंब भी कहा जाता है। शिक्षा समाज में नियंत्रण का आधार घटक है। शिक्षा समाज में समान अवसरो का विकास करती है, भेदभाव का मिटाती है साथ ही समाज में एकता स्थापित करने मे सहायक सिद्ध हुई है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने जब पुरे विश्व के धारणीय विकास के लक्ष्य को निर्धारित किये तब उसमे समावेशी शिक्षा को बहुत अधिका महत्व दिया। क्योकि शिक्षा किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करती है। समाज का कोई भी वर्ग हो सब के लिए शिक्षा समानता के अवसरो को मुहैया कराती है। समाज में अनुशान बनाये रखने के लिए देश के प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व होता है और शिक्षित समाज इसका आसान रास्ता है। समाज में अधिक से अधिक लोगों को शिक्षा का प्रचार प्रसार करना चाहिए जिससे अधिक संख्या में साक्षरता का स्तर बढ़े और देश की उन्नति में सहायक हो सके। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समाज के हर उस व्यक्ति की आवश्यकता को ध्यान में रख कर बनायी गयी है। जो पढ़ाई लिखाई के साथ साथ एक व्यवसायिक ज्ञान भी प्राप्त कर सके अपनी रूचि व सुविधाओं के अनुरूप। शिक्षा नीति के निर्माण में समाज के उस व्यक्ति के जमीनी स्तर की योग्यताओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है। शिक्षा समाज में आत्म विश्वास, आत्म जागृति एंव अपने अधिकारो के प्रति जागरूक रहने की क्षमाज का विकास करती है। शिक्षा समाज में व्यक्तियों को नई दिशा प्रदान करती है।

संदर्भ सूची

1. वास्केल, प्रमिला (2013), ''विकलांगता और शिक्षा'' नविन शोध संसार पेज. 238।
2. वर्मा, रश्मि (2013), '' शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति'' नविन शोध संसार पेज. 57।
3. नटाणी, शोभा (2010), ''भारतीय समाज एवं नारी'' मार्क प्रकाशक जयपुर।
4. paripex- Indian journal of research vol. 7 february-18
5. sarakriguide.com
6. http://researchgate.net
7. http://www.allstudyjournal.com
8. Shrinkhla ek shodhparak vaicharik patrika vol. 4july 2017.
9. व्यास, रामप्रसाद (2009), ''भारतीय नारी परिवर्तन एवं चुनौतियां'' प्रकाशन राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर पेज 188।
10. श्रीवास्तव, रागीनी (2011), ''आधुनिक समाज एवं महिलाऐं'' प्रकाशन ब्लू स्टार इन्दौर पेज 237।